# ए वतन, ए वतन हमको तेरी कसम...

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

**दोस्तों,** क्या आप यक़ीन करेंगे कि फ़िल्मी दुनिया में एक ऐसे भी गीतकार हुए हैं जो एक महान गीतकार होने के साथ साथ एक बेहतरीन संगीतकार, नृत्य निर्देशक और अभिनेता भी थे. आप कहेंगे इतनी सारी प्रतिभा एक व्यक्ति में, मगर ये सच है, जी हाँ, हम बात कर रहे हैं, मशहूर गीतकार प्रेम धवन की, जिनके लिखे देशभक्ति के गीत आज भी लोगों में असीम जोश जगा देते हैं. देशभक्ति के कालजयी गानों का जब भी जिक्र होता है तो उन्हें लिखने वालों में प्रेम धवन का नाम अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है . 'ए वतन, ए वतन हमको तेरी कसम', 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है', 'मेरा रंग दे बसंती चोला' और 'छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी' जैसे अमर देशभक्ति गीत प्रेम धवन की कलम से ही निकले हैं.

प्रेम धवन ने अपनी पढ़ाई लाहौर में की और लाहौर में कॉलेज की पढ़ाई के दौरान वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गए . वहीं उनकी मुलाकात मशहूर शायर साहिर लुधियानवी से हुई जो उनके सहपाठी भी थे. साहिर ग़ज़ल लिखते थे और प्रेम धवन गीत. अक्सर दोनों शायरी की बातें किया करते और कई बार अंग्रेजों के खिलाफ लिखी अपनी शायरी और कविताएं कॉलेज में सुनाया करते थे. उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1946 में की, जब उन्होंने फिल्म 'आज और कल' में संगीतकार के सहायक के रूप में काम किया . इसके बाद वह मुंबई आए और इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (IPTA) से जुड़ गए, जहाँ उन्हें साहिर के साथ साथ बलराज साहनी और सलिल चौधरी जैसी हस्तियों का भी साथ मिला, यहीं पर उन्होंने प्रसिद्ध नर्तक उदय शंकर से नृत्य और महान संगीतकार रविशंकर से संगीत सीखा .

1946 में आई क्लासिक फिल्म 'धरती के लाल' से बतौर गीतकार प्रेम धवन ने अपने करियर का आगाज किया था. 1955 में आई फिल्म 'वचन' के गीतों ने प्रेम धवन को पहचान दी. इस फ़िल्म में रवि का संगीत था, फ़िल्म के सारे ही गाने हिट हुए, जिनमें से 'चंदा मामा दूर के..' गीत तो आज भी उतना ही लोकप्रिय है. फिल्म 'वचन' के बाद 1956 में आई राज कपूर की फ़िल्म 'जागते रहो' का गीत 'कि मैं झूठ बोलियाँ...'' भी प्रेम धवन ने ही लिखा था, जो सुपर हिट हुआ . 1961 में प्रेम धवन की दो फ़िल्में 'काबुली वाला' और 'हम हिंदुस्तानी' आईं और दोनों के गीत सुपर हिट हुए. ख़ास तौर से 'काबुलीवाला' का मन्नाडे का गाया प्रसिद्ध गीत 'ए मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछड़े चमन..'' और 'हम हिंदुस्तानी' का ''छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी'' गीतों ने देश भर में धूम मचा दी. इन गीतों की कामयाबी ने प्रेम धवन को फ़िल्मी दुनिया में पूरी तरह स्थापित कर दिया.

इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों के गीत लिखे जिनमें 'शहीद', 'आराम', 'आरज़ू', 'तराना', 'आसमान', 'प्यार का सागर', 'ज़बक', 'शोला और शबनम', 'एक फूल दो माली', 'पूरब और पश्चिम', 'दस लाख' जैसी कल्ट फिल्में शामिल हैं. उनके गीतों में सादगी और गहराई होती थी, जो सीधे लोगों के दिलों तक पहुंचती थी . सरल आम बोलचाल की भाषा में देशप्रेम और मानवीय संवेदनाओं को पिरोना उनकी सबसे बड़ी खूबी थी. गीतकार के रूप में उनका संगीतकार अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, मदन मोहन, चित्रगुप्त और रवि के साथ बड़ा अच्छा तालमेल रहा.

उनके करियर में एक दिलचस्प मोड़ मनोज कुमार की फिल्म 'शहीद' (1965) के निर्माण के दौरान आया.मनोज कुमार ने फ़िल्म के निर्माता अपने दोस्त

'केवल कश्यप' के आगे ये शर्त रखी थी कि इस फ़िल्म का संगीत अगर कोई देगा तो वो होंगे प्रेम धवन . मनोज कुमार ने ज़ब प्रेम धवन से इस फ़िल्म का संगीत देने की बात कही, तो प्रेम धवन ने इनकार कर दिया. उनका सोचना था कि वे एक गीतकार हैं और उन्हें उसी काम पर ध्यान देना चाहिए, लेकिन मनोज कुमार अपनी बात पर अड़े रहे . मनोज कुमार ने उनसे साफ़-साफ़ कह दिया था कि अगर वो म्यूजिक देंगे तभी ये फ़िल्म बनेगी. आखिरकार उनकी जिद के आगे प्रेम धवन को मानना ही पड़ा और फिर इसके बाद जो हुआ, वह एक इतिहास है. फिल्म 'शहीद' प्रेम धवन के करियर का मील का पत्थर साबित हुई. इसके गीत और संगीत लोगों के दिलों में बस गए . फ़िल्म का हर गीत जबरदस्त लोकप्रिय हुआ. आज भी, 'ए वतन, ए वतन', 'सरफरोशी की तमन्ना' और 'मेरा रंग दे बसंती चोला' जैसे गीत देशभक्ति के गीतों में सिरमौर माने जाते हैं, इस फिल्म ने प्रेम धवन को नई पहचान दी और यह फ़िल्म उनके करियर की सबसे कामयाब फिल्मों में शुमार की जाती है .

इसी प्रकार वर्ष 1969 में आई संगीतकार रवि के संगीत से सजी सुपर हिट फ़िल्म 'एक फूल दो माली' के गीतों से उन्हें लोकप्रियता का नया मुकाम मिला. इस फ़िल्म के भी सभी गीत जबर्दस्त कामयाब हुए 'ये पर्दा हटा दो ज़रा मुखड़ा दिखा दो', 'सैयां ले गई जिया तेरी पहली नजर', 'ओ नन्हे से फरिश्ते तुझसे ये कैसा नाता, 'तुझे सूरज कहूँ या चंदा' आदि गीत आज भी काफ़ी लोकप्रिय हैं .

प्रेम धवन के लिखे कुछ अन्य यादगार गीत हैं, 'रसिया रे मन बसिया रे' (परदेसी ), 'चंदा रे जा रे जारे' (जिद्दी), 'पगड़ी सम्भाल जट्टा' (शहीद), 'जोगी तेरे प्यार में' (शहीद), 'तेरी दुनिया से होके मजबूर चला' (पवित्र पापी), 'सीने में सुलगते हैं अरमाँ' (तराना), 'सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या किया' (तराना), 'चंदा मामा दूर के' (वचन), 'ए मेरे प्यारे वतन' (काबुली वाला), 'तेरी दुनिया से दूर चले हो के मजबूर हमें याद रखना' (ज़बक), 'छोड़ो कल की बातें' (हम हिन्दुस्तानी), 'मुझे प्यार की जिंदगी देने वाले' (प्यार का सागर), 'अगर बेवफा तुझको पहचान जाते' (रात के अँधेरे में), 'हाय जीया रोए रोए' (मिलन), 'आ लग जा गले दिलरुबा' (दस लाख) आदि .

फिल्मों में गीत लिखने के साथ साथ उन्होंने शहीद, रात के अंधेरे में, पवित्र पापी, वीरअभिमन्यु, नानक दुखिया सब संसार, भारत के शहीद, द नक्सलाइट जैसी फिल्मों में संगीत भी दिया, बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने लगभग 50 से अधिक फिल्मों में नृत्य निर्देशन भी किया. नया दौर, वक्त, धूल का फूल, आरजू , गूँज उठी शहनाई, सहारा, मुन्ना आदि फ़िल्में, उनके नृत्य निर्देशन वाली मुख्य फ़िल्में हैं . फ़िल्म 'नया दौर' का प्रसिद्ध 'उड़े जब-जब जुल्फें तेरी' प्रेम धवन के ही नृत्य निर्देशन का कमाल था. फ़िल्म 'दो बीघा ज़मीन' के प्रसिद्ध गीत 'हरियाला सावन ढोल बजाता आया' में तो उन्होंने नृत्य भी किया है . प्रेम धवन बड़े भावुक व्यक्ति थे, कहते हैं कि उनका प्रसिद्ध गीत 'तुझे सूरज कहूँ या चंदा...मेरा नाम करेगा रोशन' (एक फूल दो माली) को लिखते हुए वे रो पड़े थे . उनके योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 1970 में पद्म श्री से सम्मानित किया. इसके बाद 1971 में उन्हें फिल्म 'नानक दुखिया सब संसार' के लिए सर्वश्रेष्ठ गीतकार का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला.

समय के साथ 1980 के दशक में उनके करियर की रफ्तार थोड़ी धीमी हो गई और वे फिल्मी चकाचौंध से धीरे-धीरे दूर होते गए लेकिन उनके गीतों की लोकप्रियता कभी कम नहीं हुई . आख़िरी बार प्रेम धवन ने फ़िल्म 'अप्पूराजा' (1990) के लिए लिखा.

प्रेम धवन इतने वर्सेटाइल कलाकार थे कि उन्हें सिर्फ एक ही क्षेत्र में बंधे रहना उचित नहीं लगता था, उनका कहना था कि गीत लिखना उनका जीवन है, संगीत देना उनका शौक, नृत्य करना उनकी खुशी और अभिनय करना उनके लिये एक बदलाव की तरह था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हुए भी प्रेम धवन का नाम अपने समय के दूसरे गीतकारों की तरह लाइमलाइट में नहीं रहा। इसकी वजह शायद ये थी कि वो ख़ुद को दिखावों से दूर रखते थे। वो कभी भी बड़े-बड़े बैनर्स या किसी ख़ास कैंप का हिस्सा नहीं बने । 7 मई 2001 को उन्होंने अंतिम सांस ली, लेकिन उनके गीतों ने उन्हें अमर बना दिया है। भले ही वे आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके लिखे देशभक्ति के गीत हर साल 15 अगस्त और 26 जनवरी को पूरे देश की आवाज बनकर गूंजते हैं और देश वासियों में देशभक्ति का ज़ज़्बा जगाते हैं । आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक प्रेम धवन साहब के गीत सुनिए और सदा खुश रहिये..... !!

## मैं वापस आऊंगा देख भावुक हुई कृति खरबंदा

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति खरबंदा ने इम्तियाज़ अली की बहुचर्चित फिल्म 'मैं वापस आऊंगा' देखने के बाद सोशल मीडिया पर एक बेहद भावुक पोस्ट साझा की है. इस पोस्ट में उन्होंने बताया कि फिल्म ने उन्हें अपने दिवंगत दादाजी और नानाजी की यादों में लौटा दिया और 'घर' शब्द के मायने उनके लिए पूरी तरह बदल दिए.

कृति ने लिखा कि यह फिल्म केवल एक कहानी नहीं, बल्कि उन अनगिनत लोगों के संघर्ष और त्याग का आईना है, जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों के बेहतर भविष्य के लिए अपनी दुनिया पीछे छोड़ दी. उन्होंने कहा कि अक्सर लोग उस जमीन को सामान्य मान लेते हैं, जिस पर वे आज खड़े हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि वहां तक पहुंचने के लिए किसी ने अपना सब कुछ दांव पर लगाया था.

अभिनेत्री ने निर्देशक इम्तियाज़ अली की संवेदनशील कहानी कहने की शैली की सराहना करते हुए लिखा, आपकी फिल्में अक्सर घर जैसी लगती हैं. इस बार घर नहीं मिला... इस बार घर की याद मिल गई. उनके इस एक वाक्य ने फिल्म के भावनात्मक प्रभाव को बखूबी बयान कर दिया.

कृति ने आगे कहा कि फिल्म देखने के बाद उन्हें महसूस हुआ कि घर सिर्फ ईंट-पत्थरों से बना मकान नहीं होता, बल्कि वह एहसास होता है, जो इंसान की यादों, रिश्तों और अपनापन से जुड़ा रहता है. कई बार इंसान अपने जीवन में आगे बढ़ जाता है, लेकिन मन का एक हिस्सा हमेशा उसी घर और उन लोगों के पास रह जाता है, जहां से उसकी शुरुआत हुई थी. उन्होंने फिल्म की पूरी टीम का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस फिल्म ने किसी बड़े या असाधारण नायक की नहीं, बल्कि एक आम इंसान की कहानी को बड़े पर्दे पर सम्मान के साथ प्रस्तुत किया है. यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है.

## रणवीर की धुरंधर अब जापान में होगी रिलीज

रणवीर सिंह की सुपरहिट फिल्म 'धुरंधर' अब अपनी सफलता का परचम जापान में लहराने के लिए तैयार है. भारत और दुनिया के कई देशों में शानदार प्रदर्शन के बाद यह फिल्म 10 जुलाई को जापान के सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी. फिल्म की इस अंतरराष्ट्रीय रिलीज़ को लेकर दर्शकों और मेकर्स दोनों में खासा उत्साह है.

जापान में रिलीज़ से पहले रणवीर सिंह ने वहां के दर्शकों के लिए एक विशेष वीडियो संदेश साझा किया है. उन्होंने जापानी प्रशंसकों से बड़े पर्दे पर फिल्म देखने की अपील करते हुए कहा कि 'धुरंधर' एक ऐसा सिनेमाई अनुभव है, जिसमें दमदार ड्रामा, रोमांच, शानदार विजुअल्स और गहरी भावनाएं देखने को मिलेंगी.

रणवीर ने विश्वास जताया कि फिल्म की कहानी जापानी दर्शकों को भी उतनी ही पसंद आएगी, जितनी दुनिया भर के दर्शकों को आई है. फिल्म का निर्देशन, लेखन और निर्माण आदित्य धर ने किया है. निर्माता ज्योति देशपांडे और लोकेश धर हैं. जियो स्टूडियोज की प्रस्तुति और बी62 स्टूडियोज के बैनर तले बनी इस फिल्म ने 05 दिसंबर 2025 को भारत में रिलीज़ होने के बाद बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता हासिल की थी. मजबूत कहानी, प्रभावशाली निर्देशन और रणवीर सिंह के दमदार अभिनय ने इसे वर्ष की सबसे चर्चित फिल्मों में शामिल कर दिया.

फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस के साथ-साथ विदेशी बाजारों में भी शानदार प्रदर्शन किया, जिसके बाद अब इसे जापान में रिलीज़ करने का फैसला लिया गया है. भारतीय फिल्मों के प्रति जापानी दर्शकों का बढ़ता रुझान देखते हुए मेकर्स को 'धुरंधर' से भी बड़ी उम्मीदें हैं. भारतीय सिनेमा की वैश्विक पहचान लगातार मजबूत हो रही है और 'धुरंधर' की जापान रिलीज़ इसी दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है. यदि फिल्म को वहां भी दर्शकों का भरपूर समर्थन मिलता है, तो यह रणवीर सिंह और पूरी टीम के लिए एक और बड़ी अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि साबित होगी.

## प्रीतम एंड पेड्रो में गूंजेगा दिल छूता संगीत

अपनी फिल्मों में भावनात्मक कहानी और यादगार संगीत का सफल मेल पेश करने वाले फिल्मकार राजकुमार हिरानी अब अपनी नई सीरीज 'प्रीतम एंड पेड्रो' के जरिए उसी परंपरा को आगे बढ़ाने जा रहे हैं. निर्माताओं का कहना है कि इस सीरीज में भी संगीत कहानी का अभिन्न हिस्सा होगा और हर गीत कथानक को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा.

सीरीज की रिलीज़ से पहले ही इसके गानों को दर्शकों का सकारात्मक प्रतिसाद मिल रहा है. विशेष रूप से श्रेया घोषाल की मधुर आवाज़ में रिकॉर्ड किया गया गीत 'कभी किसी से

माफी मांग लो' सोशल मीडिया और संगीत प्रेमियों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है. इस गीत की भावनात्मक प्रस्तुति दर्शकों को गहराई से जोड़ने में सफल मानी जा रही है. प्रीतम एंड पेड्रो में अभिनेत्री मोना सिंह एक गायिका की भूमिका निभा रही हैं.

यही वजह है कि संगीत उनके किरदार और पूरी कहानी का स्वाभाविक हिस्सा बन जाता है. निर्माताओं का मानना है कि गीत केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि पात्रों की भावनाओं, रिश्तों और कहानी की दिशा को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करेंगे. राजकुमार हिरानी की फिल्मों का इतिहास भी इस बात का गवाह रहा है कि उनका संगीत हमेशा कहानी का मजबूत आधार बनता है.

## महेश बाबू ने लॉन्च किया राव बहादुर ट्रेलर

तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री के सुपरस्टार महेश बाबू ने बहुप्रतीक्षित साइकोलॉजिकल थ्रिलर 'राव बहादुर' का ट्रेलर रिलीज़ कर दिया है. रहस्य और रोमांच से भरपूर इस फिल्म को निर्देशक वेंकटेश महा ने बनाया है, जबकि मुख्य भूमिका में अभिनेता सत्यदेव नजर आएंगे. फिल्म को महेश बाबू और नम्रता शिरोडकर की जीएमबी एंटरटेनमेंट प्रस्तुत कर रही है. वहीं इसका निर्माण ए एस मूवीज और श्रीचक्रास एंटरटेनमेंट्स ने संयुक्त रूप से किया है.

ट्रेलर की शुरुआत महेश बाबू के प्रभावशाली वॉयसओवर से होती है, जो कहानी की रहस्यमयी पृष्ठभूमि तैयार करता है. इसके बाद दर्शकों को एक ऐसे मनोवैज्ञानिक रहस्य की झलक मिलती है, जिसमें एक मामूली संदेह धीरे-धीरे कई लोगों की जिंदगी को प्रभावित करता दिखाई देता है. ट्रेलर में सस्पेंस, थ्रिल और भावनात्मक तनाव का बेहतरीन संतुलन देखने को मिलता है, जो फिल्म को पारंपरिक थ्रिलर से अलग पहचान देता है. ट्रेलर जारी करते हुए महेश बाबू ने कहा कि 'राव बहादुर' तेलुगु सिनेमा में एक नया और अलग अनुभव देने का प्रयास है.

उन्होंने दर्शकों से अपील की कि वे इस फिल्म को बड़े पर्दे पर देखें, क्योंकि इसकी कहानी और प्रस्तुति सिनेमाघरों में अधिक प्रभावशाली अनुभव प्रदान करेगी. फिल्म की कहानी, पटकथा, निर्देशन और संपादन की जिम्मेदारी वेंकटेश महा ने संभाली है.

## टेलीविजन हलचल

### चुडैल चली ससुराल में लौटेंगी हिबा नवाब

सोनी सब ने अपने नए फैमिली सिटकॉम 'चुडैल चली ससुराल' की घोषणा कर दी है. फैंटेसी, कॉमेडी और पारिवारिक ड्रामा के दिलचस्प मिश्रण पर आधारित यह शो जल्द ही दर्शकों के बीच दस्तक देगा. शो में हिबा नवाब, राखी विजन और अधिक मेहता मुख्य किरदार निभाते नजर आएंगे. कहानी उर्वशी (हिबा नवाब) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक दयालु और जादुई शक्तियों वाली चुड़ैल है. प्यार के लिए वह अपनी जादुई दुनिया छोड़कर आरव पटेल (अधिक मेहता) के साथ नई जिंदगी की शुरुआत करती है. हालांकि इंसानी परिवार में खुद को ढालने की उसकी कोशिशें कई मजेदार, हास्यास्पद और अप्रत्याशित घटनाओं को जन्म देती हैं, जो दर्शकों को हंसी से लोटपोट करने का वादा करती हैं.शो में राखी विजन कामिनी के किरदार में नजर आएंगी, जो एक शक्तिशाली चुड़ैल है और उर्वशी के फैसले का विरोध करती है. इसके बाद जादुई दुनिया और पारिवारिक जीवन के बीच टकराव शुरू होता है, जिससे कहानी में रोमांच, भावनाएं और मनोरंजन का नया रंग जुड़ जाता है. शो को लेकर हिबा नवाब ने कहा कि जैसे ही उन्होंने इसकी कहानी सुनी, उन्हें महसूस हुआ कि यह दर्शकों को एक अलग और ताजगी भरा मनोरंजन देगा. उन्होंने कहा कि लगभग छह वर्षों बाद सोनी सब पर वापसी करना उनके लिए घर लौटने जैसा एहसास है. हिबा ने बताया कि वह इस अनोखे किरदार और जादुई सफर को दर्शकों के साथ साझा करने के लिए बेहद उत्साहित हैं. सोनी सब लंबे समय से पारिवारिक मनोरंजन और हल्की-फुल्की कॉमेडी वाले कार्यक्रमों के लिए जाना जाता है. 'चुडैल चली ससुराल' भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए फैंटेसी और फैमिली एंटरटेनमेंट का नया स्वाद पेश करेगा.

### भीम की वापसी से बदलेगी हस्तिनापुर की कहानी

सोनी सब के लोकप्रिय पौराणिक धारावाहिक 'हस्तिनापुर के वीर' के आगामी एपिसोड में कहानी एक बड़े मोड़ पर पहुंचने वाली है. भीम की अप्रत्याशित वापसी न केवल पांडवों और माता कुंती के जीवन में खुशियां लेकर आएगी, बल्कि दुर्योधन और शकुनि के मन में भय, अपराधबोध और असमंजस भी बढ़ा देगी. भीम को मृत मान लिया गया था, लेकिन वह पूरी तरह सुरक्षित हस्तिनापुर लौट आते हैं. उन्हें जीवित देखकर पांडव और कुंती भावुक हो उठते हैं. वहीं दूसरी ओर, दुर्योधन और शकुनि के चेहरे पर चिंता साफ दिखाई देती है, क्योंकि उन्हें डर सताने लगता है कि भीम को उनके षड्यंत्र की कितनी जानकारी मिल चुकी है. दिलचस्प बात यह है कि भीम अपने खिलाफ रची गई साजिश का सच तुरंत उजागर नहीं करते. उनका शांत, संयमित और आत्मविश्वास से भरा व्यवहार दुर्योधन की बेचैनी को और बढ़ा देता है. वह लगातार इस दुविधा में रहता है कि भीम कब और कैसे उसके षड्यंत्र का पर्दाफाश करेंगे. आगे की कहानी में पांडव यह निर्णय लेते हैं कि भीम के चमत्कारिक रूप से बच निकलने का रहस्य फिलहाल गुप्त रखा जाएगा. इस फैसले के बाद पूरे हस्तिनापुर में संदेह का माहौल बन जाता है और दुर्योधन का अपराधबोध पहले से कहीं अधिक गहरा हो जाता है. यही घटनाक्रम धारावाहिक में रोमांच और रहस्य को नई ऊंचाई देगा. भीम का किरदार निभा रहे अभिनेता सुभाष ने कहा कि हस्तिनापुर लौटकर अपने परिवार को यह विश्वास करते देखना कि भीम की मृत्यु हो चुकी है, उनके किरदार के लिए बेहद भावुक पल था.

## राजामौली ने बताया एनीमेशन का सबसे बड़ा दम

ब्लॉकबस्टर बाहुबली फ्रेंचाइजी के निर्माता-निर्देशक एस.एस. राजामौली ने भारतीय पौराणिक कथाओं और एनीमेशन के संबंध पर अपनी राय साझा करते हुए कहा है कि देश की समृद्ध मिथकीय विरासत को सबसे प्रभावशाली रूप में एनीमेशन के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जा सकता है. उनका मानना है कि भारतीय पौराणिक कथाओं में ऐसे अद्भुत किरदार, रहस्यमयी संसार और कल्पनाशील दृश्य मौजूद हैं, जिन्हें एनीमेशन की असीम संभावनाएं ही पूरी भव्यता के साथ साकार कर सकती हैं.

राजामौली ने यह बात आगामी एनिमेटेड फिल्म 'बाहुबली: द इटरनल वॉर' के वर्क-इन-प्रोग्रेस प्रेजेंटेशन के दौरान कही. उन्होंने बताया कि 'बाहुबली' की दुनिया तैयार करते समय उनकी रचनात्मक टीम ने सैकड़ों कहानियां विकसित की थीं. इनमें से कई कथाएं इतनी रोमांचक और नाटकीय थीं कि वे फिल्मों के दृश्यों से भी अधिक प्रभावशाली बन गईं. उन्होंने कहा, भारतीय पौराणिक कथाएं दूसरी दुनियाओं के किरदारों के शानदार और जीवंत वर्णनों से भरी हुई हैं. उन कल्पनाओं को सही मायनों में सिर्फ एनीमेशन के जरिए ही दिखाया जा सकता है. राजामौली ने निर्देशक ईशान

शुक्ला की भी सराहना करते हुए कहा कि वे वही फिल्मकार हैं, जिनका इंतजार टीम लंबे समय से कर रही थी और जो 'बाहुबली' की दुनिया को अगले स्तर तक ले जाने की क्षमता रखते हैं. बाहुबली: द इटरनल वॉर दो भागों में बनने वाली एक एनिमेटेड महागाथा है, जिसका निर्देशन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित फिल्मकार ईशान शुक्ला कर रहे हैं.

## टॉक्सिक के टीज़र में रुक्मिणी का दमदार अंदाज

### सोशल मीडिया पर छाया मेलिसा का किरदार

फिल्म टॉक्सिक: ए फेयरीटेल फॉर ग्रोन-अप्स के नए ग्लिम्प्स लेडीज़ एंड लेडीज़ में अभिनेत्री रुक्मिणी वसंत के दमदार और स्टाइलिश अवतार ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है. सोशल मीडिया पर प्रशंसक रुक्मिणी के मेलिसा किरदार की जमकर सराहना कर रहे हैं और उन्हें इस झलक का सबसे बड़ा आकर्षण बता रहे हैं.

कांतारा: ए लीजेंड चैप्टर 1 में अपने अभिनय से पहचान बना चुकी रुक्मिणी इस फिल्म में पहले से बिल्कुल अलग अंदाज में दिखाई दे रही हैं. टीज़र में उनका मेलिसा का किरदार रहस्यमयी, प्रभावशाली और खतरनाक नजर आता है. खासकर हाथ में बंदूक लिए उनका शांत लेकिन सशक्त लुक सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है. फिल्म की झलक सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर प्रशंसकों ने रुक्मिणी के नए रूप की जमकर तारीफ की है. कई लोगों ने उनके इस परिवर्तन को शानदार बताया है, जबकि कुछ प्रशंसकों का कहना है कि 'मेलिसा' फिल्म की सबसे स्टाइलिश और प्रभावशाली किरदार साबित हो सकती है. गीतू मोहनदास के निर्देशन में बनी 'टॉक्सिक: ए फेयरीटेल फॉर ग्रोन-अप्स' में अभिनेता यश मुख्य भूमिका में हैं. बड़े पैमाने पर तैयार की जा रही यह फिल्म पहले से ही अपनी अलग दुनिया और एक्शन के लिए चर्चा में है.